जवाबी कार्यवाही की मूल बातें

Backfire Basics

Brian Martin

2012
Translation: Ramesh Sharma and Priti Tiwary,
February 2018

जवाबी कार्यवाही की मूल बातें

जवाबी कार्यवाही की प्रमुख कुंजी

- ❖ व्यक्त करना : अन्याय को छिपाने की प्रविति को चुनौती देते हुये उसे उजागर करना
- ❖ दायित्व निभाना : लक्ष्य को मान्य करते हुये अवमूल्यन को चुनौती देना
- ❖ पुनर्निर्माण करना : अन्याय को रेखांकित करते हुये उसकी प्रति-व्याख्या करना
- ❖ अनुप्रेषित करना : प्रशासकीय मार्ग से एहतियात बरतते हुये जनसमर्थन जुटाना
- ❖ प्रतिरोध करना : भय तथा धमकी के विरुद्ध खड़ा होना

जवाबी कार्यवाही : ऐसी प्रतिक्रिया जो प्रतिद्वंदी द्वारा किये गये हमले के सापेक्ष की गयी जवाबी कार्यवाही से अधिकाधिक लोगों को जोड़ सके। कोई भी अन्याय अथवा आदर्श का उल्लंघन के विरुद्ध प्रतिक्रिया भी जवाबी कार्यवाही है।

जवाबी कार्यवाही, जन साधारण के प्रतिकूल प्रतिक्रिया अथवा प्रतिद्वंदी के द्वारा की गयी कार्यवाही के रूप में समझा जा सकता है। उन परिस्थितियों में भी जब जब दोषी व्यक्ति - अन्याय से दूर जाता हुआ प्रतीत हो किन्तु उसके दावों के उल्टा पड़ जाने की थोड़ी भी संभावना रह जाये, जवाबी कार्यवाही का महत्त्व है।

अधिकांश परिस्थितियों में शक्तिशाली समूहों द्वारा किये गये अन्यायों के प्रति जवाबी कार्यवाही, अपमान को कम करने में कारगर होती है।

अन्याय पर आक्रोश को कम करनें के पाँच तरीक़े

1. कार्यवाही के विरुद्ध प्रतिक्रिया दें
2. जवाबी लक्ष्य का निर्धारण करें
3. क्या घटित हुआ, इसकी समुचित व्याख्या करें
4. न्याय के लिये आधिकारिक सूत्रों और संस्थाओं का उपयोग करें
5. अन्याय की कार्यवाही में शामिल लोगों को भय दिखायें

अन्याय के विरुद्ध जवाबी कार्यवाही की तैयारी

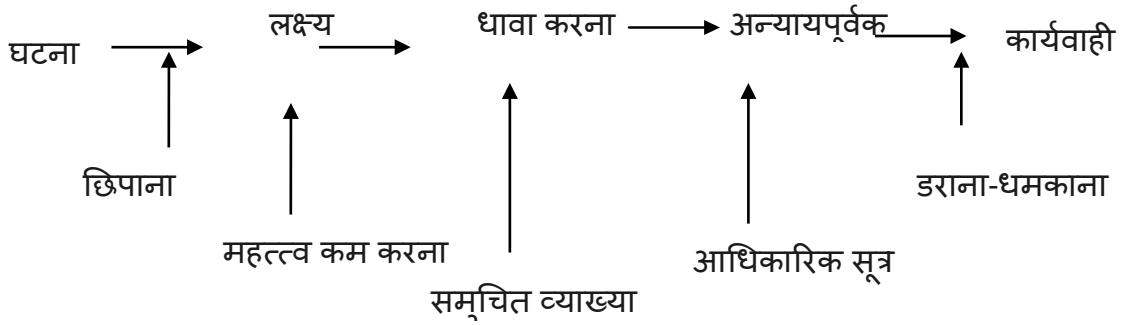

जुल्म को कम करनें के पाँच तरीक़े और घटनाक्रम से संबंधित धारणायें और प्रतिक्रियायें

जवाबी कार्यवाही के लिये दो परिस्थितियाँ

1. जवाबी कार्यवाही को उचित, अनुचित अथवा अनुपातिक माना जाता है
2. कार्यवाही के बारे में जानकारी सम्बद्ध लोगों को भेजी जाती है

अन्याय के विरुद्ध जवाबी कार्यवाही के प्रमुख उपाय

1. अन्याय की कार्यवाही का पर्दाफ़ाश करें
2. सर्वमान्य लक्ष्य का निर्धारण करें
3. अन्याय की समुचित व्याख्या करें
4. जनसरोकार विकसित करें
5. धमकियों का प्रतिरोध करें

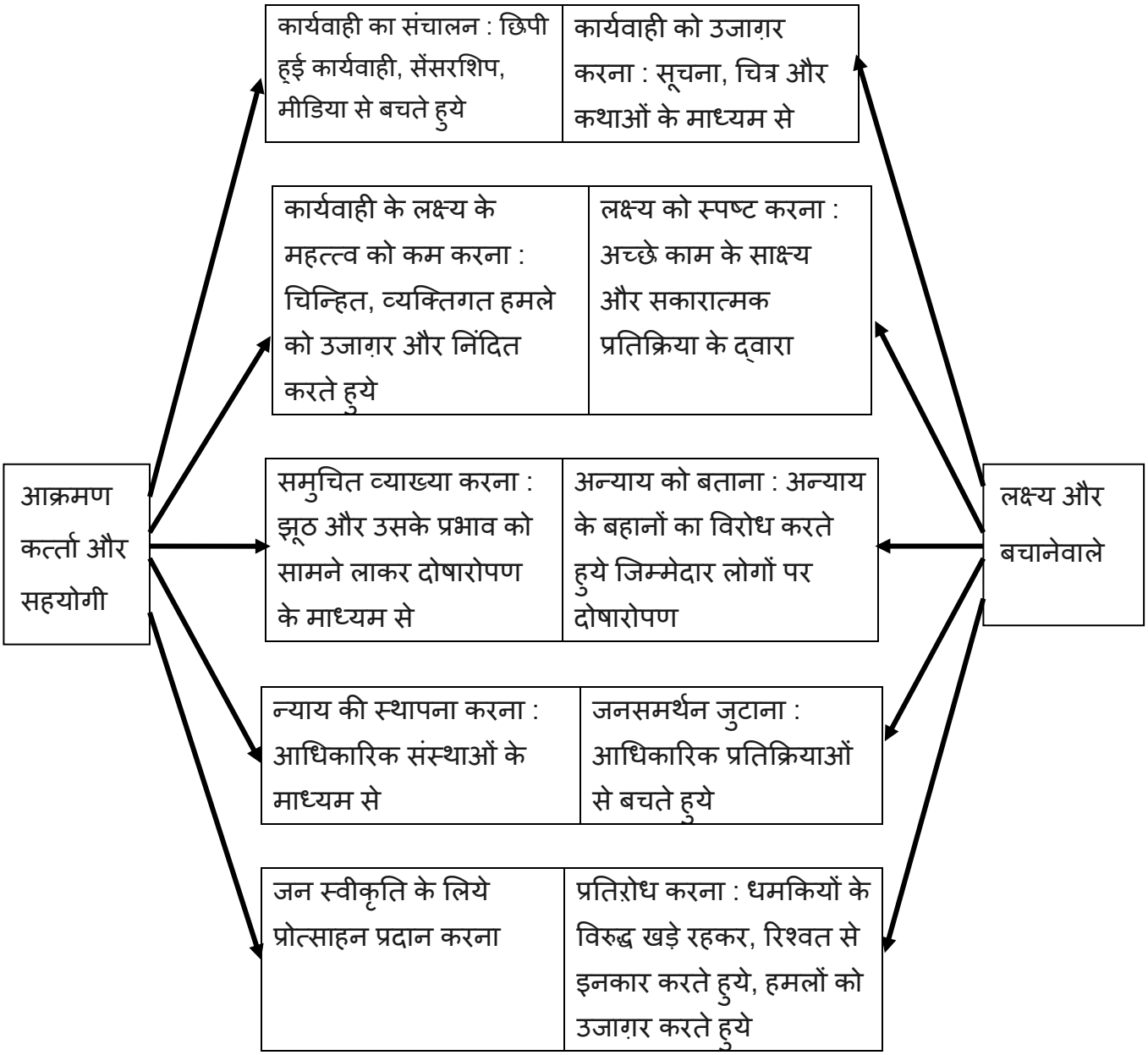

एक महत्वपूर्ण तथ्य : एक निश्चित समय और अवसर पर संवाद का विशेष महत्त्व होता है। संवाद की ग्राह्यता को निर्धारित करनें वाले तीन महत्वपूर्ण कारक इस प्रकार हैं -

ग्राह्यता या अनुपालन : व्यवस्था में अन्याय के प्रति एक आधारभूत संवेदनशीलता। यदि लोग पहले से ही किसी प्रकार के दुरुपयोग के विषय में चिंतित हैं, तो किसी भी नये प्रकरण में उनकी प्रतिक्रिया सज़ग होगी। ऐसे में सामाजिक आंदोलन संवाद की ग्राह्यता और अनुपालन को बढ़ा सकते हैं।

सूचना का परिवेश : अन्य घटनाओं की तुलना में अन्याय का प्रभावी दृश्यांकन। और क्या हो रहा है - जैसे प्रश्नों के साथ उत्सुकता बढ़ाना। इन बातों का पुट रखते हुये अन्याय के प्रति मीडिया में रूचि पैदा की जा सकती है।

सक्रियता : सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से कार्यवाही के अवसर विकसित करना। लेकिन जब कार्यकर्त्ता करनें के लिये तैयार होते हैं तब अचानक अन्याय की जवाबी कार्यवाही भी हो सकती है।

एक उदाहरण : जब अहिंसक आंदोलनकारियों के विरुद्ध पुलिस हिंसक हो जाती है

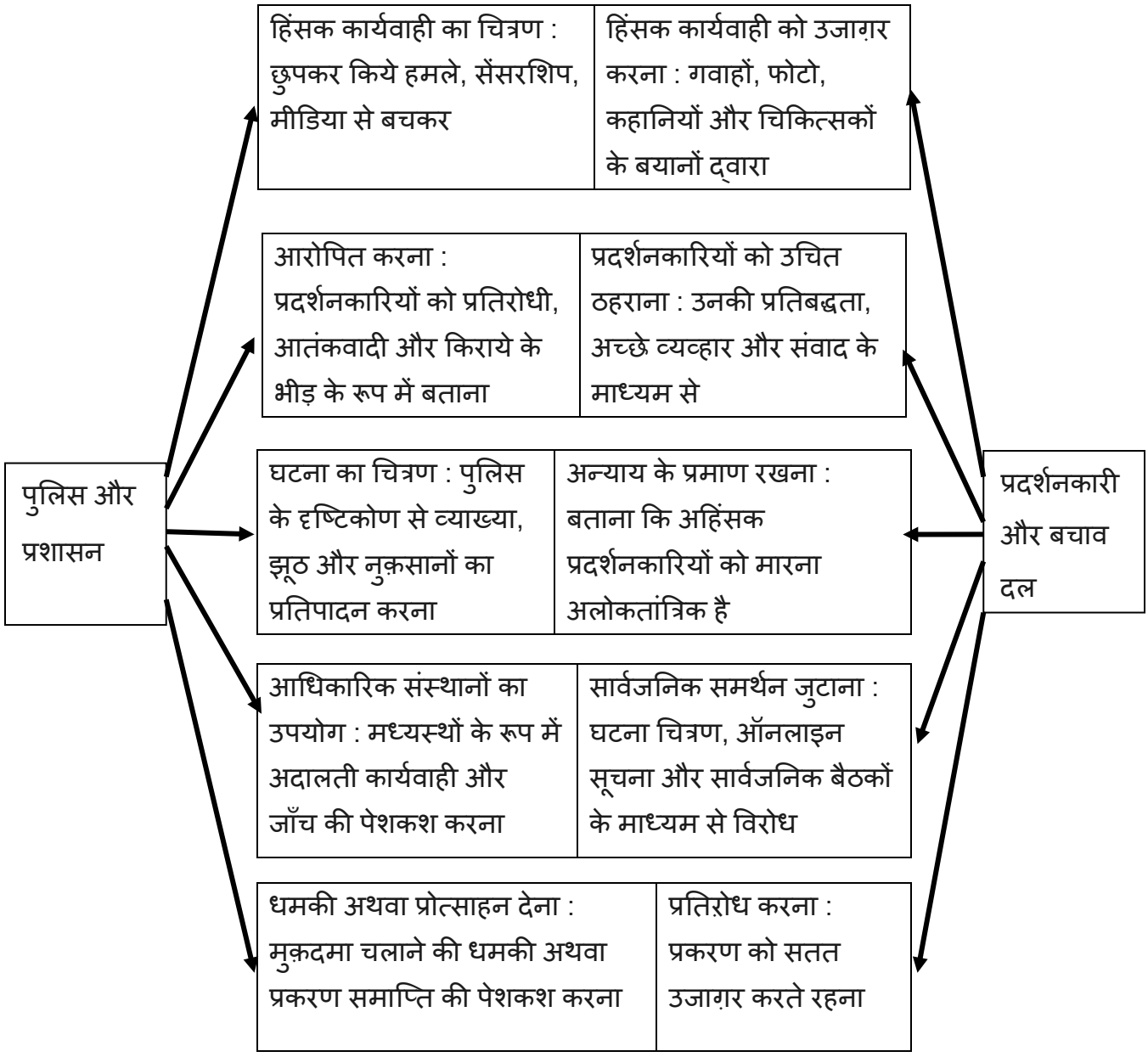

किसी भी अन्याय का प्रतिरोध पांच प्रमुख कारकों से शुरू किया जा सकता है - ख़ुलासा करना, दायित्व निभाना, समुचित चित्रण करना, जन साधारण को समझाना तथा अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना।

जैसे - पुलिस की हिंसक प्रतिक्रिया का निषेध करने के लिये चश्मदीद गवाहों और कैमरा तैयार रखना, अपने व्यवहार प्रभावी बनाना आदि।

जवाबी कार्यवाही से संबंधित प्रकाशन

http://www.bmartin.cc/pubs/backfire.html

अथवा सर्च इंजिन में "Brian Martin backfire" खोजना

जवाबी कार्यवाही के संबंध में सेंसरशिप, मानहानि, पुलिस अत्याचार, अहिंसक प्रदर्शनकारियों का दमन, यातना, नरसंहार आदि विषयों के विश्लेषण यहाँ प्राप्त किये जा सकते हैं।

चित्र : ऑस्ट्रेलिया से जॉन पार्किन के निर्वासन के विरुद्ध प्रदर्शन

Brian Martin, bmartin@uow.edu.au, phone 02-4221 3763

संस्करण : 26 फ़रवरी 2012